शिक्षण की रचनात्मक विधियाँ

पुष्प लता वर्मा*

छात्र के जीवन में शिक्षा का महत्व सर्वोपरि होता है। शिक्षा से छात्र के व्यक्तित्व में निखार आता है और शिक्षा से ही छात्र भविष्य के लिए अपने आप को तैयार कर सकता है। शिक्षा का माध्यम ऐसा होना चाहिए कि छात्रों को लगे ही नहीं कि उन पर कुछ थोपा जा रहा है। शिक्षण विधियाँ ऐसी होनी चाहिए कि छात्रों को स्कूल जाने के लिए प्रोत्साहित करें न कि वह अपने माता पिता से डर कर स्कूल जाए। यहाँ पर कुछ ऐसी ही शिक्षण विधियों को बताया गया है जिससे छात्र अपने आप ही रोचक ज्ञान अर्जित कर सकता है।

तेज़ी से बदलते समय के साथ अपने आप को उसके अनुरूप ढाल लेना ही वर्तमान समय की चुनौती है। शिक्षा के क्षेत्र में हो रहे नये प्रयास इसे और भी रोचक बना रहे हैं। आज कल वह समय नहीं रह गया जब मास्टर जी एक छड़ी लेकर सभी बच्चों को पढ़ाते थे। आज का समय है बदलाव का, कुछ नया करने का, इसमें शिक्षक और छात्र दोनों ही लगे हुए हैं। यहाँ पर कुछ ऐसी ही अनोखी पढ़ाने की विधियों के बारे में बात की जा रही है जो छात्र को रोचक ज्ञान अर्जित करने में सहायक हो सकें।

कक्षा में जब शिक्षक पहली बार जाता है तो छात्र उसे कुछ अलग नज़रों से देखते हैं उसे समझने की कोशिश करते हैं कि यह नया टीचर हमें कैसे पढ़ायेगा, हमारे साथ कैसा व्यवहार करेगा इत्यादि। ऐसा ही कुछ हाल शिक्षक का होता है वह सोचता है कि छात्र कक्षा में शोर तो नहीं मचाएँगे, पढ़ने में रुचि लेंगे या नहीं। धीरे-धीरे दोनों आपस में घुल-मिल जाते हैं और पढ़ना-पढ़ाना रोचक होता चला जाता है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि शिक्षक अपने छात्रों के बौद्धिक स्तर व मानसिक स्तर को ध्यान में रखकर शिक्षण करता है।

1. **क्रियाकलाप-आधारित विधि**– आज के वातावरण में यह ज़रूरी है कि छात्रों को ध्यान में रखकर क्रियाकलापों का विकास किया

* *सहायक प्राध्यापिका,* विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली।

जाए जिसमें सभी छात्र अधिक से अधिक भाग ले सकें। छात्रों को केंद्रित कर बनाया गया क्रियाकलाप कुछ इस तरह का होना चाहिए जैसे– करके सीखो, अनुभवात्मक, छात्र की सक्रिय भूमिका इत्यादि। यह छात्रों के पूर्ण विकास में सहायक हो, उसमें सोचने की क्षमता का विकास हो। क्रियाकलाप मनोरंजनात्मक होने के साथ-साथ छात्रों में सक्रिय चिंतन मनन की क्रिया का विकास करें। क्रियाकलाप तो शिक्षण की एक विधि है जिसमें छात्र को उसमें भाग लेने में आनंद आए, मनोरंजन हो जैसे– नाटक, गीत-संगीत, कविता, पपेट-शो, फन गेम, पहेलियाँ इत्यादि। एक अच्छी शिक्षण विधि वही होती है जो छात्रों में सोचने की क्षमता का विकास करे व उसका मनोरंजन भी करे।

एक तरफ तो यह क्रियाकलाप पाठ्यचर्या पर केंद्रित होते हैं वहीं दूसरी तरफ इन पर सामाजिक प्रभाव साफ़ नज़र आता है इसलिए यह विधि शिक्षक और छात्र दोनों के द्वारा अपनायी जाती है इसमें शिक्षक सभी छात्रों को भाग लेने का अवसर देता है जिससे उसकी प्रतिभा का विकास होता है।

2. **खेल-खेल में शिक्षा**– खेल छात्र की स्वाभाविक प्रक्रिया है। इसमें प्राइमरी कक्षाओं के छात्रों को सिखाने में मदद मिलती है। खेल-खेल में छात्र बहुत सी बातें सीख जाते हैं जो कि उसे जीवन में आगे बढ़ने में मदद करती हैं। खेल एक रोचक, प्रायोगिक, आनन्दायक व स्वप्रेरित क्रिया है।

प्रश्नोत्तर, क्विज़, शब्दों का खेल, वाद-विवाद जगहों का वर्णन, गीतों का आयोजन। इस तरह के खेल छात्रों को भाषा का ज्ञान प्राप्त करने में सहायक होते हैं। स्वाध्याय और भाषा के विकास के लिए बाल पुस्तकें, शब्दकोश, सामूहिक वार्तालाप एक अच्छा माध्यम है। घर व बाहर खेले जाने वाले कुछ खेल ऐसे होते हैं, जिनके माध्यम से छात्र खेल-खेल में ही भाषा को सीख जाता है जैसे– समानार्थक शब्द व विपरीतार्थक शब्द, फ्लैश कार्ड, पिरामिड खेल, मिलाओ और सुलझाओ जैसी पहेलियाँ आदि।

पहेली, लोकोक्ति, क्विज़-पहेलियाँ, ज्ञान को परखने के लिए बनायी जाती हैं क्विज़ पहेली जिसमें छात्र हमेशा कुछ नया सीखता है उससे उसका भाषा व गणित का ज्ञान भी बढ़ता है। क्विज़ से छात्रों में आत्मविश्वास बढ़ता है। क्विज़ प्रतियोगिता में प्रश्न सरल और मनोरंजक तरीके से बनाये जाते हैं। जिसका उत्तर छात्रों को एक निश्चित समय में देना होता है। इससे छात्रों में आपस में अच्छे से अच्छा करने की भावना का विकास होता है। पहेलियों व लोकोक्तियों में भी प्रश्नों को इस प्रकार पूछा जाता है कि वे बताने वाले की कल्पना शक्ति पर आधारित होते हैं। कुछ सरल पहेलियाँ छात्र को गणित व भाषा को खेल-खेल में सिखा देती हैं।

3. **कहानी वाचन (सुनाना)**– कहानी सुनना छात्रों को हमेशा से ही प्रिय लगता है जिसमें समय भी गुज़र जाता है और छात्रों को उबाऊ, थकाने वाला भी नहीं लगता है। कहानी शिक्षण के द्वारा कुछ तथ्यों को भली-भाँति समझाया जा सकता है जैसे– सामाजिक विज्ञान, नैतिक ज्ञान, आसपास के वातावरण के प्रति जागरूकता, हमारी संस्कृति, साहित्य आदि। शिक्षक भिन्न-भिन्न सभ्यताओं को कथाओं, नीति कथा, जीवनी के माध्यम से छात्रों को सुना सकता है।
4. **स्व-शिक्षण**– शिक्षक, छात्रों को कुछ वस्तुएँ एकत्रित करने को कहे जैसे– अनाज, दालें, बीज, लकड़ी तथा साथ ही उन वस्तुओं की सूची बनाते हुए कि वह कहाँ से उत्पन्न होती हैं उनका उपयोग किस-किस प्रकार से किया जाता है इत्यादि। कक्षा में छात्रों की स्वयं द्वारा एकत्रित वस्तुओं को सभी को दिखाएँ और उनके बारे में दूसरे छात्रों से भी चर्चा करें। इस तरह से छात्र स्वयं सीखते हैं।
5. **अवलोकन (निरीक्षण) विधि**– छात्रों के अंदर अपने आस-पास को जानने की इच्छा (जिज्ञासा) हमेशा से ही रहती है। उन्हें अपने आस-पास देखने से ही बहुत-सी चीज़ों का ज्ञान हो जाता है। शिक्षक छात्र को अपने आस-पास की वस्तुओं को निरीक्षण करने को कहे जैसे–
   - कि वह सर्दी में किस तरह के कपड़े पहनते हैं।
   - फलों और बीजों को खाने वाले पशु पक्षी।
   - वह फसल जिसको हम खाने में सबसे ज़्यादा इस्तेमाल करते हैं।
   - सूर्योदय व सूर्यास्त के समय आसमान कैसा दिखाई देता है।
   - पिकनिक पर जाने के लिए पसंदीदा स्थान कौन-सा है, इत्यादि।

   छात्रों को उपर्युक्त में से किसी एक विषय पर कुछ लाइनें लिखने को कहें जो उन्होंने स्वयं देखी हों।

   शिक्षक को चाहिए कि वह छात्रों को पास के मैदान, पार्क, बगीचे में ले जाए जिससे छात्र वहाँ पर होने वाले क्रियाकलापों को देख सकें। यह छात्रों में प्रयोग करने की क्षमता को बढ़ाता है। सामाजिक अध्ययन का शिक्षक छात्रों को पास के खेतों, तालाब, छोटे व छायादार जंगल, बगीचों, आदि में ले जाए। फ़ील्ड विज़िट के समय छात्रों को पत्तियाँ, फूल, बीज, चिड़ियों के गिरे हुए पंख व अन्य वस्तुएँ जो उनकी ज़रूरत की हों इकट्ठा करने को कहें। वह साथ-साथ यह भी ध्यान दे कि वह जगह कैसी है जैसे– पहाड़ी या चट्टान या घना जंगल या फिर किसी पानी के किनारे का स्थान और वहाँ पर होने वाली क्रियाओं को ध्यान से देखे। इस फ़ील्ड विज़िट के समय अध्यापक छात्रों के साथ रहे व उन जगहों के बारे में आवश्यक जानकारी छात्रों को देता रहे। अवलोकन या भ्रमण के समय अर्जित किया गया ज्ञान छात्रों

को अपने आसपास के वातावरण के बारे में महत्त्वपूर्ण जानकारी प्रदान करता है।

6. **चित्रकला**– यह वह कौशल है जो किसी भी वस्तु को आकर्षक बना देता है, यह सबसे ज़्यादा रोचक शिक्षण विधि है। भिन्न-भिन्न तरह की वस्तुएँ, पेपर, रंग, मिट्टी, छात्रों में उत्साहपूर्वक कुछ बनाने को प्रेरित करती है। कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं– ग्लास पेंटिंग, पेस्टल पेंटिंग, कार्टून, कोलाज़ बनाना, फेब्रिक पेंटिंग, पॉट पेंटिंग, फूल बनाना, मेंहदी के डिज़ाइन आदि।

   छोटे बच्चों को चित्रकला का शौक होता है वे तरह-तरह की आकृतियाँ, गोले, लाइनें अपनी कॉपी पर और घरों में इधर-उधर बनाते रहते हैं। शिक्षक ऐसे छात्रों को प्रोत्साहित कर चॉक और पेंसिल से सरल चित्र बनाने को कहे। वह छात्रों को सूर्योदय, सूर्यास्त, पहाड़ों, झरनों, नदियों, पेड़ के चित्र बनाने में मदद करे।

   शिक्षक चित्र के माध्यम से स्कूल बिल्डिंग के पास की महत्त्वपूर्ण जगहों को बनाने में मदद कर सकता है। चित्र और फ़िल्म के द्वारा अर्जित ज्ञान छात्र के मस्तिष्क में एक छवि बना लेता है जो कि अलग-अलग बिंदुओं को आपस में जोड़कर उसकी विश्लेषण की योग्यता को बढ़ावा देते हैं। छात्र द्वारा बनाया गया चित्र (चिड़िया, नाव, पेड़, पशु) कक्षा के सभी छात्रों को दिखाना तथा छात्रों से कहना कि इस चित्र पर कोई कहानी या कविता बनाकर सुनाओ। छात्र जगह-जगह से चित्र इकट्ठा करके (जरनल, मैगज़ीन, कैलेंडर, जियोग्राफ़िकल मैगज़ीन) शिक्षक को दें और शिक्षक उनकी मदद से कक्षा में पढ़ाएँ। यह विधि शिक्षण को रोचक बनाने में प्रयोग की जा सकती है। शिक्षक छात्रों के बीच कार्ड बाँटता है सभी कार्ड पर अलग-अलग तरह के चित्र बने हुए हैं और कुछ देर बाद प्रत्येक छात्र से उसके कार्ड पर बने चित्र के बारे में दो लाइनें बोलने को कहता है।

7. **गीत-संगीत**– गीत-संगीत प्राथमिक शिक्षण के लिए अति आवश्यक होता है। जिस तरह हाथ से लिखना सिखाते हैं उसी तरह बालक आवाज़ को आवश्यकतानुसार ऊँचा नीचा करना सीखता है। शिक्षक कुछ शिक्षाप्रद गीत इकट्ठे कर छात्रों को सुनाता है जैसे– पेड़, मानव, जानवर व पक्षियों की ज़रूरतें कैसे पूरी करता है। भिन्न-भिन्न रंगों की चिड़िया व उनकी आवाज़ें, चिड़ियों के हमारे आस-पास रहने से हमारा व्यवहार किस प्रकार प्रभावित होता है। शिक्षक को चाहिए कि वह गीत की लाइनें स्वयं गाए तथा उसके पीछे-पीछे छात्र उन लाइनों को दोहरायें, गीत गाते समय इस बात पर ध्यान देना आवश्यक है कि गीत से हम क्या सीख रहे हैं, कुछ छात्र गीत गाते समय क्रियाएँ भी करें। इस माध्यम से छात्रों में छुपी गीत-संगीत, लोक नृत्य आदि की प्रतिभा उजागर होती है, सभी छात्रों को इसमें बराबर

का मौका देना चाहिए ताकि वह अपने अंदर छुपी प्रतिभा को उजागर कर सकें।

8. **रुचि कक्षा (हॉबी क्लासेज़)**– रुचि कक्षाएँ जैसे– वाद विवाद, ड्रामा, नृत्य, संगीत, चित्रकला, कविता, विज्ञान क्लब, सामान्य विज्ञान क्लब आदि के रूप में आयोजित की जानी चाहिए। इन का आयोजन हफ्ते में दो घंटे का होना चाहिए। प्रत्येक छात्र अपनी इच्छा के अनुसार किसी भी विषय को लेकर उसमें आगे बढ़ सकता है। इससे सभी छात्रों को अपने बारे में जानने का मौका मिलेगा जो उसमें आत्मविश्वास बढ़ाने में सहायक होगा।
9. **समूह क्रिया**– छात्र अपने समूह में अपने आपको आधिक सहज महसूस करते हैं। वह एक-दूसरे से अच्छे से संप्रेषण कर सकते हैं। कभी वह गप-शप, कभी लड़ाई-झगड़ा और कभी वाद-विवाद करते रहते हैं। सामूहिक क्रियाकलाप का प्रयोग ज्ञान को असरदार रूप में समझाने में किया जा सकता है।

   उदाहरण के लिए कक्षा के छात्रों को तीन अगल-अलग समूहों में विभाजित किया गया समूह-1, समूह-2 और समूह-3 सभी छात्रों को स्कूल के आस-पास एक किलोमीटर के अंदर भेज दिया तथा उनको यह निर्देश दिये कि वह वहाँ की सामान्य जानकारी पेड़, पक्षी, खेतों की फसलें, लोगों के क्रियाकलाप के बारे में संक्षिप्त लेख लिखें। दूसरे समूह को यह निर्देश दिया कि वह पहले समूह द्वारा एकत्रित जानकारी पर प्रश्न पूछें। शिक्षक इस समूह क्रिया में सही दिशा प्रदान करने की भूमिका निभाता है।
10. **कानाफूसी सत्र**– इस क्रियाकलाप में कक्षा के छात्रों को छोटे-छोटे समूहों में विभाजित कर उन्हें दो से तीन मिनट का समय देते हैं इस समय में उनके बीच किसी विषय-वस्तु को लेकर वार्तालाप होता है। इस क्रिया में सभी छात्रों को एक-दूसरे के साथ घुलने-मिलने का मौका मिलता है और छात्रों में लीडरशिप के गुण का भी विकास होता है।
11. **सामान्य अध्ययन कोना**– शिक्षक छात्रों की मदद से विद्यालय में सामान्य अध्ययन कोना बनाएँ जहाँ पर वह अलग-अलग जगह से एकत्रित की हुई वस्तुएँ रखें। इस तरह की वस्तुओं को देखने से छात्रों में जिज्ञासा व जागरूकता बढ़ेगी और उन्हें भी इस तरह के क्रियात्मक कार्यों में भाग लेने में आनंद आयेगा। छात्रों द्वारा एकत्रित वस्तुएँ जैसे– चिड़ियों के पंख, भिन्न-भिन्न प्रकार की पत्तियाँ, फूल, अनाज, सूखे बीज आदि। इनके अलावा अन्य तरह से भी चीजों को व उनके बारे में जानकारी छात्रों द्वारा इकट्ठा की जा सकती है। जैसे कुछ दुर्लभ चित्र, फ़ोटो किसी रजिस्टर में चिपकाएँ व उसके नीचे कुछ लाइनें उसके बारे में लिखें। इस तरह की क्रियाएँ करवाने से छात्रों को अपने आस-पास की वस्तुओं की जानकारी मिलेगी।

12. **वाद-विवाद**– वाद-विवाद में छात्र किसी विषय को लेकर उसके पक्ष और विपक्ष में अपने विचार रखते हैं इसमें छात्र एक-दूसरे से बहुत कुछ सीखते हैं और उनमें मानव मूल्यों के विकास में मदद मिलती है।
13. **रोल प्ले, प्रोजेक्ट वर्क**– छात्रों को किसी विषय (प्रसंग) पर पाँच-दस मिनट का नाटक करने के लिए कहना। विषय (प्रसंग) पर आधारित नाटक करने पर छात्र कठिन से कठिन विषय भी आसानी से सीख जाते हैं।
    प्रोजेक्ट कार्य में सभी छात्र अलग-अलग प्रोजेक्ट पर काम करते हैं और उन्हें अपने विचारों को रचनात्मक रूप में व्यक्त करने का मौका मिलता है। प्रोजेक्ट वर्क निम्न प्रकार का हो सकता है– प्रदूषण, वनों का काटना, वन संरक्षण, ग्रीन हाउस इफ़ैक्ट, जनसंख्या वृद्धि, नैनोटेक्नालॉजी, कंप्यूटर और इंटरनेट आदि। छात्र इन विषयों पर जानकारी एकत्रित करके उसे रिपोर्ट के रूप में बना कर शिक्षक को दिखाएँ।
14. **समाचार-पत्र पढ़ना**– समाचार-पत्र एक महत्त्वपूर्ण सहायक सामग्री है। यह ज़्यादा खर्चीला नहीं होता है और आसानी से उपलब्ध भी हो जाता है इसमें दी गई जानकारी सही व तथ्यों पर आधारित, फ़ोटो के साथ होती है। छात्र बचपन से ही अपने घर में पापा को अखबार पढ़ते देखते हैं उस समय छात्र अखबार को बड़ों द्वारा पढ़ने वाली वस्तु मानते हैं। अब जब वह अपनी कक्षा में अखबार को पाते हैं और पढ़ते हैं तो उससे उन्हें बहुत सी जानकारी मिलती है। यह क्रियाकलाप कुछ इस तरह किया जा सकता है। एक टेबल पर 4-5 छात्रों को बैठाकर उनको अखबार पढ़ने के लिए दिया जाए तथा शिक्षक छात्रों से कहे कि वह अखबार में दिनाँक व दिन देखें, प्रतिदिन ऐसा करने से छात्रों को सप्ताह में आने वाले दिनों व महीनों का ज्ञान होता रहेगा और छात्रों को दिनों व महीनों के नाम स्मरण हो जाएँगे।
    दूसरी क्रिया में छात्रों को अखबार का कुछ भाग पढ़कर उसमें आने वाले कठिन शब्दों को रेखांकित करना, प्रतिदिन ऐसा करने से छात्रों में पढ़ने की प्रवृत्ति बनेगी साथ ही साथ कठिन शब्द भी उनके मस्तिष्क में उतर जाएँगे। इसके लिए सभी कक्षाओं में एक कोना होना चाहिए जिसमें छात्रों में पुस्तकालय जाने के प्रति रुचि जाग्रत होगी।

अभिभावक व समाज का सहयोग

जब शिक्षक, छात्रों के माता-पिता (अभिभावकों) को स्कूल के क्रियाकलापों में सम्मिलित करते हैं जैसे– अभिभावक मीटिंग, बच्चों से संबंधित विषय, उनकी उपस्थिति, उनका कार्य, स्वच्छता और अनुशासन जिससे छात्रों को इस बात का अहसास होता है कि वह विद्यालय में किस प्रकार से रह कर कार्य करते हैं। छात्रों को चाहिए कि वह सामाजिक कार्यों में भाग लेते रहें जैसे– वृक्षारोपण, समाज सेवा, श्रमदान, पल्स-पोलियो टीकाकरण आदि।

अत: इस प्रकार बतायी गयी समस्त विधियाँ– खेल, पहेली, क्विज़, शैक्षिक भ्रमण, क्लेमॉडलिंग, पपेट बनाना, रोलप्ले, ड्रामा, कहानी, म्यूज़िकल चेयर, नृत्य, संगीत, कला, प्रदर्शनी, सेमीनार, पोषक चार्ट, सामूहिक खेल, वाद-विवाद, पोस्टर प्रतियोगिता, चित्र कला, निबंध प्रतियोगिता इत्यादि छात्रों को एक नयी दिशा प्रदान करते हैं जिसमें वह व्यावहारिकता को जोड़कर कुछ ज़्यादा सीखने की कोशिश करते हैं। सुबह की प्रार्थना योग से शुरू करनी चाहिए प्रत्येक कक्षा के बाद कुछ विराम हो जिसमें छात्र अपने आपको तरो ताज़ा करें। सप्ताह में कुछ समय इस तरह के कार्यक्रमों के लिए रखना चाहिए जिसमें छात्रों को अपनी प्रतिभा दिखाने का मौका मिलता रहे।